© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

विदूषक के सन्दर्भ में भास और कालिदास के दृष्टिकोण

डॉ. चन्द्र कान्त मिश्र

असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय डुमरियागंज,

सिद्धार्थनगर उ.प्र. भारत।

यदि नाटक मानव–जीवन के विवेचक हैं और नाटक के पात्र मानव–समाज के प्रतिनिधि हैं, तो निःसन्देह विदूषक हास्य उत्पन्न करने वाला एक ऐसा पात्र है, जो मुख्य रस की गम्भीरता से सामाजिक को मुक्त करने के लिए निरन्तर तत्पर रहता है। विदूषक हास्यप्रिय पात्र होता है। वह अपने कार्यों, वेषभूषाओं, शारीरिक चेष्टाओं आदि से हास्य की सृष्टि करता है। इसका नाम पुष्पवाचक या ऋतुवाचक होता है। वह प्रायः कलह कराने में भी रूचि लेता है।[1] जयदेव ने अपनी कृति 'प्रसन्नराघव' में भास की 'भासो हासः' कहकर प्रशंसा की है।[2] भास ने अपने बहुसंख्यक हास्य रस के पात्रों के सहज एवं सरल वर्णनों के द्वारा पाठकों को अभिभूत किया है। भास ने वसन्तक, मैत्रेय और सन्तुष्ट नामक पात्रों के माध्यम से अपने रूपकों 'स्वप्नवासवदत्तम्', 'प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्', 'चारुदत्तम्' एवं 'अविमारकम्' में हास्यपूर्ण आनन्द का निष्पान किया है। इसके विपरीत कालिदास ने अपने विदूषकों के वर्णन में नाट्यशास्त्रीय तकनीकों एवं परम्पराओं का सर्वथा निर्वहण किया है। कालिदास के रूपकों में उसके विदूषक जीवन के स्पन्दन और स्फूर्ति तथा मौलिकता की भावना से ओतप्रोत होकर इधर–उधर भटकते हुए दिखायी पड़ते हैं। कालिदास के 'मालविकाग्निमित्रम्' 'विक्रमोर्वशीयम्' और 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के विदूषक गौतम, माणवक और माधव्य जीवन्त हास्यरस के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

विदूषक कथानायक का सार्वकालिक मित्र होता है। अपनी प्रगाढ़ मित्रता के कारण विदूषक अभिनेता का अत्यावश्यक सहचर (साथी) बन जाता है, जिसके कारण वह नर्मसचिव कहा जाता है। भास के 'स्वप्नवासवदत्तम्' का व विदूषक वसन्तक अभिनेता के सच्चे सहायक एवं नाटक की कथावस्तु के विकास के मुख्य स्रोत के रूप में परिलक्षित होता है। वह केवल हास्य की सृष्टि ही नहीं करता अपितु उदयन की सफलता और असफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका का भी निर्वहण करता है। वह राजा के दुःख में उसके मनोबल को बढ़ाता है एवं नाटक की विभिन्न समस्याओं के समाधान में नयी युक्तियों को सोचता है जिससे नाटकीय कथा–प्रवाह में निरन्तरता बनी रहती है। विदूषक की दक्षता एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व आश्चर्यचकित कर देते हैं। जब वह राजा के अश्रुओं को धोने के लिए पानी लाता है और एकाएक पद्मावती को देखता है, तब वह राजा की आँख में काशपुष्प का पराग पड़ गया है, ऐसा कहकर पद्मावती से राजा का मुख धोने हेतु जल लेने की बात द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाता है।[3]

नाटक के चतुर्थ अंक में ही जब हम दुःखी राजा को पद्मावती की उपस्थिति में आपत्तिजनक स्थिति में पाते हैं, तो विदूषक राजा को गले लगाकर उसे छुटकारा दिलाता है और मगध के राजा का स्वागत करने के लिए कहता

IJSRST1962561 | Received : 12 Jan 2019 | Accepted : 28 Jan 2019 | January-February-2019 [6 (1) : 540-544]

है।[4] भास का दूसरा विदूषक सन्तुष्ट अपने समुदाय के लोगों से अलग होकर भी अपने स्वामी अविमारक के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करता है। अविमारक भी सन्तुष्ट को हृदय से प्यार करता है। उसके बिना सम्पूर्ण संसार उसके लिए निरुद्देश्य है।[5] कालिदास का विदूषक गौतम 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में अपने राजा अग्निमित्र का ऐसा सहायक है, जो नाटक में सर्वत्र दिखायी देता है। साथ ही वह अपने राजा तथा नाटक की सफलता के लिए नयी–नयी योजनाएँ बनाता रहता है। परन्तु विदूषकों की श्रेणी में गौतम को जो अविस्मरणीय बना देता है, वह है राजा के प्रेमपरक साहसिक कार्यों में उसका सहायक बनना। कालिदास के दो अन्य विदूषक माणवक और माधव्य कर्मसचिव का अभिनय करने में असफल प्रतीत होते हैं। माणवक 'विक्रमोर्वशीयम्' में भोजन और सुरा के विचारों में इतना निमग्न रहता है कि वह नाटक के मुख्य कथानक से पूर्णरूपेण असम्बद्ध हो जाता है। दूसरी तरफ मााधव्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में नायिका शकुन्तला को देखने का कोई भी अवसर नहीं प्राप्त करता है। नाट्यकला के दृष्टिकोण से जिस दृश्य में नायक के साथ उसकी उपस्थिति आवश्यक है, उन दृश्यों में वह अनुपस्थित है।

उपर्युक्त विवेचना के परिणामस्वरूप हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भास के विदूषक कालिदास के विदूषकों की तुलना में अधिक कर्मसचिव हैं। श्रृंगारिक नाटकों में हास्य का अपरिहार्य आश्रयत्व विदूषक की उपस्थिति को अनिवार्य बना देता है। इस प्रकार के नाटकों में विदूषक की अनिवार्य उपस्थिति उसको नायक के प्रेम–प्रसङ्गों में उसका अभिन्न मित्र एवं विश्वसनीय सहचर बना देती है। भास का वसन्तक अपने विचित्र एवं विद्रूप वेश–भूषा एवं व्यंग्यात्मक कथन के द्वारा उत्तेजक हँसी उत्पन्न करते हुए रंगमंच पर कर्मसचिव (नर्मसहचर) के रूप में उपस्थित होता है। वह राजा के प्रेम में सहायता करने के लिए षड्यन्त्र रचता है। लेकिन भास के दो अन्य विदूषक सन्तुष्ट और मैत्रेय नायक–प्रेम में सहायक होने में असफल रहते हैं। यदि कोई विदूषक नायक के रतिविषयक सहायक के रूप में अन्य विदूषकों को अपने गुणों से अतिक्रमित करता है, तो वह निःसन्देह गौतम है, जो अग्निमित्र का विश्वसनीय साथी है। गौतम अपनी दक्षता से राजा अग्निमित्र एवं मालविका को एक दूसरे से मिलाता है–

''भवति, तिष्ठ। किमपि वो विस्मृतः कर्मभेदः। तं तावत्प्रक्ष्यामि।''[6]

पुनः वही गौतम साँप से काटे जाने का बहाना करके रानी से नाग मुद्रित अंगूठी प्राप्त करके मालविका और उसके मित्र को मुक्त कराकर नायक का शृङ्गारिक सहायक बनता है।

''अविधा अविधा। भो वयस्य, सर्पो मे उपरि पतितः।''[7]

इसके विपरीत माणवक और माधव्य अपने नायक के प्रेम को पूर्ण कराने में नितान्त असफल हैं। माणवक 'विक्रमोर्वशीयम्' में उर्वशी के प्रति राजा के प्रेम का रहस्योद्घाटन कर देता है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक माधव्य

मात्र हँसी–मजाक के द्वारा राजा को शान्ति प्रदान करता है। राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को न याद करने के कारण अत्यन्त दुःखी होता है, तब माधव्य राजा के प्रेम के विषय में इस प्रकार कहता है–

''तिष्ठ तावत्, अनेन दण्डकाष्ठेन कन्दर्पव्याधिं नाशयामि।''[8]

यदि भास का वसन्तक अपने राजा के प्रेम में सहायक बनता है, तो कालिदास का गौतम अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को खर्च करके अपने राजा के प्रेम–प्रसङ्गों की सफलता चाहता है। इस प्रकार कालिदास के विदूषकों का दल भास के विदूषकों के दल की तुलना में कर्मसचिव और नर्मसचिव का संयोजन है। कतिपय सिद्धान्तवादियों के द्वारा यह परम्परा सुरक्षित तथा अनुरक्षित की गयी कि विदूषक का नामकरण वसन्त ऋतु के कुछ फूलों के नाम पर होना चाहिए।[9] इस परम्परा का भास ने अंशतः पालन किया है। उनका 'वसन्तक' विदूषक इस कोटि में आता है। सन्तुष्ट और मैत्रेय का इस परम्परा से कोई भी सम्बन्ध परिलक्षित नहीं होता है। कालिदास के विदूषक भी इस परम्परा से कोई समानता नहीं रखते। कुछ आलोचक माधव्य के विषय में यह कहते हैं कि यह नाम वसन्त ऋतु से सम्बद्ध है, लेकिन यह निष्कर्ष न होकर मात्र वाग्जाल है।

विदूषक के रूप रंग के विषय में भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में लिखा है कि विदूषक को बौना, ब्राह्मण, दन्तुर, लाल आँखों वाला, खल्वाट तथा विकृत आकृति वाला होना चाहिए।[10] इस प्रकार के विद्रूप विदूषक का चित्रण कालिदास ने अपने नाटकों में किया है, जबकि भास के नाटकों में इसका अभाव है। कालिदास के 'विक्रमोर्वशीयम्' में माणवक उर्वशी के सौन्दर्य के विपरीत अपने सौन्दर्य को बताकर जहाँ एक ओर हास्य उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी तरफ अपनी विद्रूपता भी व्यक्त करता है–

'किं तत्र भवती उर्वशी अद्वितीयारूपेण अहमिव विरूपतया?'[11]

इसी प्रकार 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अंक के प्रारम्भ में माधव्य के कथन– ''भवतु, अङ्गभङ्ग विकल इव भूत्वा स्थास्यामि''[12] तथा ''यद्वेतसः कुब्जलीलां विडम्बयति''[13] विदूषक के विकृत अंग की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करते हैं। यही कालिदास का वैशिष्ट्य है। इसके विपरीत भास अपने विदूषकों को विद्रूप या विकृत अङ्गों वाला प्रदर्शित करने की इच्छा नहीं करते हैं। रसारर्णवसुधाकर के अनुसार विदूषक का नाम वसन्तक एवं कपिलेय जैसा होना चाहिए। विनोद के दृष्टिकोण से 'कपिलेय' नाम महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका सम्बन्ध बन्दर की विशेष जाति से है। 'विक्रमोर्वशीयम्' में चेटी माणवक को चित्रलिखित बन्दर के रूप में सम्बोधित करती है–''अहो! आलेख्य वानर इव किमपि मन्त्रयन्निभृत आर्यमाणवकस्तिष्ठति।''[14]

इसी नाटक में राजा आयुष्कुमार को अपने प्रिय मित्र ब्राह्मण माणवक (विदूषक) को अशङ्कित होकर प्रणाम करने को कहता है। इस पर माणवक कहता है– ''किमिति शङ्किष्यते? आश्रमवास परिचित एव शाखामृगः।''[15]

'मालविकाग्निमित्रम्' में गौतम (विदूषक) एक पीले वर्ण के वानर को अपने भ्राता के रूप में सम्बोधित करता है।[16] लेकिन इसके विपरीत भास के रूपकों में विदूषक के लिए वानर जैसे आकार का वर्णन नहीं प्राप्त होता है। नाटक में हास्य उत्पन्न करने के लिए एक वैकल्पिक सिद्धान्त का विमर्श किया गया, जिसे विकृतवाक् की संज्ञा दी गयी। बाद में इसी को अभद्रवचन, हास्यपूर्ण चुटकुला एवं असंगत कथन का नाम दिया गया। ध्यातव्य है कि कालिदास के विदूषक दासियों से संवाद करते समय सामान्य निन्दापरक अभिव्यक्ति का आश्रय ग्रहण करते हैं। कालिदास का प्रसिद्ध विदूषक गौतम 'मालविकाग्निमित्रम्' में दासी इरावती को 'दास्याःसुता' कहता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् का माधव्य भी इसी कथन का प्रयोग करता है। भास के विदूषक अप्रचलित परन्तु सार्थक अभिकथन के द्वारा दासियों से वार्तालाप करते हैं। 'अविमारकम्' में सन्तुष्ट का कथन इसका ज्वलन्त उदाहरण है–

'गण्डभेददास्याः शीलं जानन्नप्यात्मनो भोजनविस्रम्भेणच्छलितोऽस्मि..... इत्यादि।'[17]

कीथ के अनुसार कालिदास के विदूषक भास के विदूषकों की तुलना में अधिक अपरिष्कृत एवं कर्कश हैं।[18] इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भास और कालिदास दोनों नाटककारों ने तत्कालीन समाज के अनुसार अपने विदूषकों को माध्यम से नाटक की सुन्दर प्रस्तुति हेतु अभद्र शब्दों का प्रयोग किया है। इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विदूषक दासियों से प्रायः अभद्र शब्दों का प्रयोग करते हैं। इससे विदूषक और दासी के मध्य रागात्मक सम्बन्ध की प्रतीति होती है। भास के 'स्वप्नावासवदत्तम्' नाटक के चतुर्थ अंक के प्रारम्भ में वसन्तक एक दासी से प्रेमपूर्ण वार्तालाप में संलग्न दिखायी पड़ता है। दासी अत्यन्त कोमल हाव–भाव के साथ कहती है कि वह उसे भोजन लाने के लिए क्यों नहीं कहता है–''किं निमित्तं वारयसि भोजनम्?''[19]

पुनः इसी नाटक के पञ्चम अंक में वसन्तक पद्मिनिका से मिलकर अपने मनोगत भावों का आदान–प्रदान करता है। ''भवति! सत्यं? न जानामि।''[20]

इसी प्रकार अविमारकम् में सन्तुष्ट और नलिनिका का तथा चारूदत्तम् में मैत्रेय और रदनिका का सम्बन्ध इसी तथ्य की पुष्टि करता है। इसके विपरीत कालिदास के विदूषक दासियों से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में असफल रहते हैं। कालिदास का माणवक विक्रमोर्वशीयम् में दासी निपुणिका से एक बार मिलता है और वह चतुराई से उससे राजकीय रहस्य जाने लेती है।[21] 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पञ्चम अङ्क में माधव्य दासी द्वारा पीटा हुआ दिखायी देता है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भास और कालिदास संस्कृत नाटक के दो निष्ठावान् नाटककार भिन्न–भिन्न काल एवं समाज से सम्बद्ध हैं। भास उस पुरातन काल के हैं जिसमें जीवन सरल, मानवीय भावना सहज एवं सामाजिक अन्तर्क्रिया सभी प्रकार के प्रतिबन्धों से मुक्त थी। परन्तु कालिदास उस काल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें जीवन अत्यन्त जटिल, मानवीय विचार संयमित तथा सामाजिक सम्बन्ध प्रतिबन्धित थे। अतः कालिदास को विशिष्ट एवं सुसंस्कृत समाज की तरफ उन्मुख होने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसीलिए उनका हास्य समाज के सर्वोत्तम व्यक्तियों को केन्द्रित करके था। अन्ततोगत्वा हम कह सकते हैं कि जहाँ एक तरफ भास के विदूषक शान्त, निश्छल, सहज एवं सरल हैं, वहीं दूसरी ओर कालिदास के विदूषक प्रत्युत्पन्नति एवं विवेकशील हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः
   हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।। (साहित्यदर्पण 3/42)
2. यस्याश्चोरश्चिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरो।
   भासो हासः कविकुलगुरुकालिदासो विलासः।। – (प्रसन्नराघव, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।)
3. विदूषक– भवति! वातनीतेन काशकुसुमरेणुनाऽक्षिनिपतितेन साश्रुपातं खलु तत्र भवतो मुखम्। तद् गृह्णातु भवतीदं मुखोदकम्। (स्वप्नवासवदत्तम्, चतुर्थोऽङ्कः, पृष्ठ 103
4. उचितं तत्रभवती मगधराजस्यापराहणकाले भवन्तमग्रतः कृत्वा सुहृज्जनदर्शनम्। – (स्वप्नवासवदत्तम्, चतुर्थोऽङ्कः पृष्ठ 105)
5. अविमारकः – का नु खलु सन्तुष्टस्यावस्था। सुष्ठु भवेद् यदि मे निर्गमनं तेन श्रुतं न श्रुतं चेद् विपत्स्यते स ब्राह्मणः। अथवा किं मम सर्वारम्भैस्तेन विना। (अविमारकम्, चतुर्थोऽङ्क, पृष्ठ 114)
6. मालविकाग्निमित्रम्, द्वितीयोऽङ्क, पृ0 47
7. मालविकाग्निमित्रम्, चतुर्थोऽङ्क, पृ0 139
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, षष्ठोऽङ्क, पृ0 382
9. साहित्यदर्पण 3/42
10. नाट्यशास्त्र 24/103
11. विक्रमोर्वशीयम्, द्वितीयोऽङ्कः, पृ0 50
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, द्वितीयोऽङ्कः, पृ0 88
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, द्वितीयोऽङ्कः, पृ0 94
14. विक्रमोर्वशीयम्, द्वितीयोऽङ्कः, पृ0 40
15. विक्रमोर्वशीयम, पञ्चमोऽङ्कः, पृ0 239
16. 'साधु रे पिङ्गलवानर, साधु। परित्रातस्त्वया स्वपक्षः।'– (मालविकाग्निमित्रम्, चतुथोऽङ्क, पृ0 145
17. अविमारकम्, द्वितीयोऽङ्कः, पृ0 31
18. संस्कृत ड्रामा, ए0वी0कीथ
19. स्वप्नवासवदत्तम् चतुर्थोऽङ्कः पृ0 73
20. स्वप्नवासवदत्तम् पंचमोऽङ्कः पृ0 109
21. विक्रमोर्वशीयम् द्वितीयोऽङ्कः